# सेहत... कितना घातक है ब्लैडर कैंसर

ब्लैडर कैंसर भारतीयों में होने वाला छठा सबसे आम कैंसर है। ब्लैडर (मूत्राशय) कैंसर उन लोगों में काफी आम है जो धूम्रपान करते हैं। सामान्यता इस प्रकार के कैंसर के कोई विशेष लक्षण नहीं होते हैं। हाल ही में गुजरे दौर के ख्यात स्टार विनोद खन्ना का निधन हुआ। वे एडवांस ब्लैडर कैंसर से पीड़ित थे।

डॉ कपिल कुमार,
डायरेक्टर, सर्जिकल ऑन्कोलॉजी, बीएलके कैंसर सेंटर, नई दिल्ली

जिन्हें भी यूरिन पास करने में तकलीफ हो या यूरिन में रक्त आए तो तुरंत किसी कैंसर रोग विशेषज्ञ को दिखाएं। ये ब्लैडर कैंसर के प्रारंभिक लक्षण हो सकते हैं। इसके कुछ संकेतों से पहचानकर फर्स्ट स्टेज में ही अलर्ट हुआ जा सकता है। ब्लैडर कैंसर के अधिकतर मामले 60 पार की उम्र के लोगों में देखे जाते हैं लेकिन, आधुनिक जीवनशैली युवाओं को भी इसका शिकार बना रही है।

**ब्लैडर कैंसर:** ब्लैडर पेल्विक क्षेत्र में गुब्बारे के आकार का एक अंग होता है। यह हमारे यूरिनरी सिस्टम का हिस्सा होता है, जिसमें किडनी से छनकर आया यूरीन एकत्र होती है और यहीं से शरीर से बाहर निकलती है। तंबाकू के अत्यधिक सेवन ने भारतीयों में ब्लैडर कैंसर होने का खतरा बढ़ा दिया है। एडवांस ब्लैडर कैंसर एक गंभीर स्थिति है और अगर तुरंत उपचार न कराया जाए तो यह जानलेवा साबित हो सकता है। ब्लैडर कैंसर उन कैंसर में से है, जिनके एक बार ठीक होने के बाद दोबारा होने की दर बहुत अधिक है। इसलिए एहतियात आवश्यक है।

**कैंसर स्टेज-** स्टेज 1- ब्लैडर की आंतरिक परत में होता है लेकिन, उसकी मांसपेशीय दीवार प्रभावित नहीं होती है। स्टेज 2 कैंसर ब्लैडर पर आक्रमण करता है लेकिन, सिर्फ ब्लैडर तक ही सीमित रहता है। स्टेज 3 कैंसर की कोशिकाएं ब्लैडर के ऊतकों से आसपास के ऊतकों तक फैल जाता है। स्टेज 4 कैंसर कोशिकाएं लिम्फनोड्स और दूसरे अंगों तक फैल जाता है, जैसे के हड्डियां, लीवर या फेफड़े जैसे आंतरिक अंग।

**ब्लैडर कैंसर के लक्षण:** हालांकि शुरुआत में इसके कोई स्पष्ट लक्षण नहीं दिखाई देते हैं। लेकिन जब एक बार यह एडवांस स्टेज पर पहुंच जाता है, तब निम्न लक्षण दिखाई देते हैं-

यूरिन में रक्त (हिमेटुरिया) के कारण यूरिन चमकीले लाल रंग या गहरे भूरे रंग की दिखाई दे सकती है। यूरिन सामान्य दिखाई दे सकता है, लेकिन सूक्ष्मदर्शी में यूरिन की जांच करने पर रक्त दिखाई दे सकता है। बार-बार मूत्र त्यागना। मूत्र त्यागने में दर्द होना। कमर में दर्द। पेल्विक पेन। इसके प्रमुख लक्षण हैं।

ये लक्षण यूरिनरी संक्रमण (बिनाइन ट्यूमर्स ब्लैडर स्टोन्स) में भी दिखाई दे सकते हैं। इसलिए अगर इस प्रकार के लक्षण दिखाई दे तो अपने डॉक्टर से संपर्क करें।

**रिस्क फैक्टर्स :** ब्लैडर कैंसर तब होता है जब ब्लैडर क्षेत्र की कोशिकाएं असामान्य रूप से विकसित होने लगती हैं। असामान्य कोशिकाओं का यह अनियंत्रित विकास ट्यूमर का निर्माण कर लेता है। ब्लैडर कैंसर क्यों होता है, इसका निश्चित कारण पता नहीं है।

**धूम्रपान करना :** धूम्रपान करने से हानिकारक रसायन यूरिन में एकत्र होने लगते हैं। यह उसकी अंदरूनी परत को क्षतिग्रस्त कर देते हैं। अगर आप धूम्रपान करते हैं तो आपके ब्लैडर कैंसर की चपेट में आने की आशंका दुगनी हो जाती है।

**उम्र बढ़ना :** हालांकि युवा लोगों में भी यह होता है, लेकिन सामान्यता यह 60 पार के लोगों को ही अपना शिकार बनाता है।

**रसायनों का एक्सपोजर :** आर्सेनिक या रंग, रबर, चमड़ा, कपड़े और पेंट बनाने वाले उद्योगों में इस्तेमाल होने वाले रसायन।

मूत्रमार्ग का बार-बार होने वाला गंभीर संक्रमण ब्लैडर कैंसर का रिस्क फैक्टर माना जाता है।

**परिवार में हो :** जिनके माता-पिता या निकट संबंधियों को ब्लैडर कैंसर है, उनमें इसका खतरा बढ़ जाता है।

**डायग्नोसिस:** सिस्टोस्कोपी के दौरान एक पतली नली (सिस्टोस्कोप) यूरेथ्रा से डालकर यूरेथ्रा और ब्लैडर की जांच की जाती है।

कैंसर के स्टेज के हिसाब से उपचार होता है।

**ट्रांसयूरेथ्रल रिसेक्शन ऑफ ब्लैडर ट्यूमर (टीयूआरबीटी)** अगर ट्यूमर बहुत छोटा है और ब्लैडर की दीवार पर आक्रमण नहीं किया है तो सर्जरी के द्वारा उसे निकाला जाता है। अक्सर ट्रांसयूरेथ्रल रिसेक्शन ऑफ ब्लैडर ट्यूमर (टीयूआरबीटी) का इस्तेमाल ब्लैडर की आंतरिक परत में स्थित ट्यूमर को निकालने के लिए किया जाता है। इस सर्जरी के कुछ दिन बाद तक यूरिन में रक्त आ सकता है या दर्द हो सकता है।

**सेग्मेंटल सिस्टेक्टोमी :** इसे आंशिक सिस्टेक्टोमी भी कहा जाता है। इसमें सर्जरी द्वारा ब्लैडर का एक भाग भी निकाल दिया जाता है, जिसमें कैंसरग्रस्त कोशिकाएं हैं। यह सर्जरी की जाती है जब कैंसर एक क्षेत्र तक ही सीमित है। नवीनतम तकनीकों ने रेडिकल सिस्टेक्टोमी को रोबोटिक सर्जरी के इस्तेमाल द्वारा करना संभव बना दिया है।

**फैक्ट** ब्लैडर कैंसर से पीड़ित 60 प्रतिशत मरीजों में उपचार कराने के बाद यह पुनः हो जाता है। पुरुषों में महिलाओं की तुलना में इसका खतरा अधिक होता है।